



आलू की फसल के प्रमुख कीट और उनका प्रबंधन

योगेन्द्र कुमार मिश्रा¹, अजय वर्मा², अमित कुमार शर्मा¹ एवम् पलक दुबे¹

¹जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्व, विद्यालय, जबलपुर (मध्य प्रदेश), ²भा.कृ.अनु.प. -केंद्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर, राजस्थान

आलू की फसल को कई प्रकार के कीट हानि पहुँचाते हैं जैसे- हरा तेला, सफेद मक्खी, चेपा, हड्डा बीटल, आलू का सलभ (मोथ) एवं चोर सूण्डी आदि। हरा तेला, सफेद मक्खी तथा चेपा रस चूस कर हानि करते हैं, जबकि हड्डा बीटल व चोर सूण्डी पत्तों को खाकर तथा सलभ की सूण्डियां खेत में पड़ें या रखें आलुओं में सुराख करके नुकसान पहुँचाते हैं।

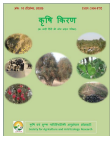
हरे तेले: यह आलू का मुख्य कीट है। इसके बच्चों व प्रौढ़ का रंग अधिक तापमान पर हरा पीला होता है व कम तापमान पर कुछ लाल रंग आ जाता है। प्रौढ़ 3 से 3.5 से.मी. लम्बा होता है। इसका शरीर आगे की ओर चौड़ा व पीछे से पतला होता है यह त्रिभुजाकार दिखता है।

हानि: इस कीट का आक्रमण फसल में अक्टूबर से नवम्बर तक और बसंतकालीन में फरवरी से अप्रैल तक होता है। आमतौर पर इस कीट का आक्रमण अधिक सर्दी पर नहीं होता है। प्रौढ़ व बच्चे दोनों ही पत्तों का रस

चूसते हैं। जिससे पत्तें उपर की ओर से मुड़ जाते हैं तथा उनके किनारों पर पीलापन आने लगता है। अधिक प्रकोप होने पर पत्तें ईट के रंग जैसे होते हैं।

चेपा: आलू की फसल में नुकसान करने वाला एक महत्वपूर्ण कीट है। इसके बच्चे व प्रौढ़ आमतौर पर पंखहीन होते हैं। इसका शरीर 1 मि.मी. लम्बा गोलाई की शक्ल में हरे रंग का होता है। पंखहीन कीट मादा होती है, जो कि अण्डें न देकर सीधे बच्चे पैदा करती है। सर्दियों के मौसम में जब आसमान में बादल छाये हो तथा वायुमण्डल में नमी अधिक हो तो उस समय इस कीट की संख्या एकदम बढ़ जाती है, क्योंकि एक सा वातावरण इस कीट के लिए अच्छा होता है।

हानि: इस कीट के प्रौढ़ व बच्चों दोनों ही पत्तियों से रस चूसकर फसल को हानि पहुँचाते हैं एवं साथ ही साथ कई प्रकार के विषाणु रोग भी फैलाते हैं, जिससे फसल में बहुत हानि हो जाती है। इस कीट से ग्रसित फसल के पत्तें पीले होकर मुड़ जाते हैं।



सफेद मक्खी: यह पीले सफेद रंग का कीट लगभग 1.5 मि. मी. लम्बा होता है, जिसका शरीर सफेद पाउडर से ढका रहता है इसके प्रौढ़ काफी तेजी से उड़ते हैं जबकि बच्चे पत्तों की निचली सतह से रस चूसते हैं। इस कीट का आक्रमण भी हरे तेले की तरह ही होता है, और हानि पहुंचाने का तरीका उसी प्रकार है। प्रौढ़ व बच्चे दोनों ही हानि पहुंचाते हैं।

चोर या कटुआ सूंड़ी: इस कीट की सूंड़ी 4 से 5 से.मी. लम्बी मटमैले भूरे रंग की होती है जिसका शरीर चिकना होता है।

हानि: ये सूंड़ियां रात के समय जमीन से बाहर निकलकर पौधे के तने को जमीन की सतह से या थोड़ा जमीन से नीचे काट देती हैं और दिन के समय भूमि में 5 से 7 से.मी. की गहराई पर या सड़े-गले पत्तों के नीचे छुपी रहती हैं। यदि ध्यान से देखा जाये तो कटे हुए पौधों को खींचकर यह सूंड़ी अपने सुराख के नीचे के नजदीक खाने के लिये ले जाती है कभी-कभी तो सूंड़ी आलू के कंदों को खाकर उनमें सुराख कर देती है। थोड़ा भी इस सूंड़ी को स्पर्श करने पर गोल हो जाती है। इसका ज्यादा आक्रमण बसन्तकालीन फसल में फरबरी - मार्च में होता है।

आलू का शलभ (ट्यूबर माथ): पूर्ण विकसित सूंड़ी 1.8 से.मी. लम्बी हल्के गुलाबी रंग की होती है जिसका सिर भूरा होता है इस कीट का प्रकोप खेतों के बजाय गोदामों में अधिक होता है।

हानि: इस कीट की छोटी-छोटी सूंड़ियां अण्डों से निकलते ही पत्तियों में अथवा आलू में सुरंगें बनाकर उन्हें खाना शुरू कर देती हैं। सूंड़ियां पहले पत्तियों में सुरंगें बनाती हैं और बाद में उन्हीं सुरंगों के माध्यम से मुख्य तने के उपर जाती हैं। परिणामस्वरूप तने सूख जाते हैं। तने से सूंड़ी फिर आलू में प्रवेश कर जाती है।

समेकित कीट नियंत्रण के उपाय:

- o ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करें।
- o घास एवं वैकल्पिक परपोषी पौधों को निकल दें।
- o समय पर बुआई करें।
- o कीट के अण्ड समूह, इल्ली एवं शंखी आदि एकत्र कर नष्ट करें।
- o प्रकाश प्रपंच द्वारा इस कीट के पतंगों को आकर्षित कर नष्ट करने हेतु प्रति रात्रि कम से कम दो घण्टे 7 से 9 बजे तक प्रकाश प्रपंच का उपयोग करें।
- o खेतों के बीच घांस-फूस के छोटे-छोटे ढेर को शाम के समय जला देना चाहिये।



- o आलू की फसल पर सफ़ेद मक्खियों की संख्यां को निगरानी करने एवं इन्हे पकड़ने हेतु पीले चिपचिपे ट्रैप का उपयोग करें ।
- o जैव नियंत्रण के रूप में लेडी बर्ड बीटल का प्रयोग उपयोगी सिद्ध हुआ है।
- o मैदानी क्षेत्रों में मिट्टी में पर्याप्त नमी होने पर बुवाई के समय नालियों में फोरेट 10-जी की 10 किलो मात्रा का प्रति हेक्टर की दर से उपचार करके माहू जैसे रोग वाहको को 45 दिनों तक फसल पर आने से रोका जा सकता है इसके बाद आवश्यकता पड़ने पर फसल पर किसी उपयुक्त कीटनाशक जैसे इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. 3 मि.ली. दवा प्रति 10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।
- o पहाड़ी क्षेत्रों में आलू की खेती वर्षा पर निर्भर करती है अतः दानेदार कीटनाशक से उपचार नमी की कमी या ज्यादा वर्षा के कारण प्रभावशाली नहीं रहता इसलिये फसल पर माहू के आगमन पर पैनी नजर रखें व आवश्यकता पड़ने पर कीटनाशक जैसे इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. 3 मि.ली. दवा प्रति लीटर पानी में 10-15 दिनों पर 1 से 2 छिड़काव करें।
- o जैव नियंत्रण में ब्रेकानिड बर्, एपेंटेलिस प्रजाति उपयोगी पाये गये हैं।
- o कर्तन कीट का प्रकोप देखते ही पत्तियों पर कीटनाशक क्लोरोपायरीफोस 20 ई.सी. 2.0 मिली. दवा प्रति लीटर पानी या डायक्लोरवास 76 ई.सी. दवा का 1.0 मिली. दवा प्रति लीटर पानी की दर से उपयोग करें।
- o कीट के प्रकोप को कम करने के लिये भण्डारण के समय जिन आलूओं में शलभ का प्रकोप हो उन्हें निकालकर फेक दें।
- o आलू के शलभ से बचने के लिए गोदामों में रखे आलू के उपर बालू की 10 से 25 सेमी मोटी तह लगायें ताकि प्रौढ़ अण्डें न दे सके।
- o खेत से आलू निकालने के बाद भी उन्हें खेत में खुला न रखे ताकि प्रौढ़ अण्डे न दे सकें।
- o आलू को ठण्डें, हवादार स्थान में जहा का तापमान 7 से 8 डिग्री सैण्टीग्रेड हो, रखना चाहिए।
- o सिर्फ एक उपचार से इस कीट की रोकथाम संभव नहीं है खेत एवं भंडारग्रहो में पोटैटो ट्यूबर मोथ के नियंत्रण के लिये खेत में बुवाई हेतु रोग एवम् कीट रहित स्वस्थ आलू बीज का ही उपयोग करें।



-
- o खेतों में आलू की बीजाई 10 सेमी गहराई तक करने से कीट को काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। खेतों में समय से कंदों पर मिट्टी चढ़ना चाहिए ताकि कोई भी कन्द जमीन से बाहर न रहे खेतों में नियमित रूप से सिंचाई करते रहे जिससे खेतों में दरार न आने पाए।
 - o भंडार ग्रहों में आलू के ढेर के नीचे एवं ऊपर सूखी हुई लैंटाना या सफेदा की 2.5 सेमी मोटी तह बिछाने पर इन कीटों से बचा जा सकता है।
 - o खाने हेतु आलू के ऊपर बेसिलस थुरेन्जेन्सिस (बी.टी.) या ग्रेनुलोसिस वायरस के चूर्ण का 300 ग्राम प्रति क्विंटल की दर से छिड़काव करें।
 - o खेतों में कन्द सलभ को पकड़ने हेतु गंध फास आधारित ट्रैप (20 ट्रैप प्रति हेक्टेयर) का उपयोग प्रभावशाली रहता है।
-